REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

आधुनिक हिन्दी छायावादी कविता में सार्वभौमिकता

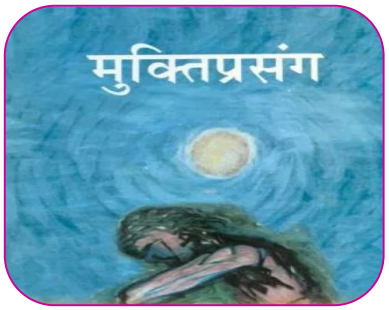

प्रा. डॉ. जायदा सिकंदर शेख
सा.प्राध्यापक हिंदी विभाग ,मत्स्योदरी कला महाविद्यालय,
तीर्थपुरी, ता. घनसावगी, जि. जालना.

प्रस्तावना :

सार्वभौमिकता से तात्पर्य है, जो सर्वत्र विस्तृत है, जिसकी व्याप्ति सब में है, जो सबसे संबंधित है। वह गुण जो प्रकृति, या सामूहिक सभी व्यक्तियों, राष्ट्रों तथा मानव जातियों में विस्तृत हो। वस्तुतः जो सबसे सम्पर्कित है। सबमें व्याप्त है वह सार्वभौम है। जिसकी व्याप्ति में सम्पूर्ण विश्व आ जाए। विश्व की संस्कृतियों का इतिहास सद् और असद् वृत्तियों के संधर्ष का, असत्य पर सत्य के विजय का इतिहास है। मनुष्य ने प्रेम की शक्ति और घृणा के विध्वंसकारी स्वरुप को पहचान कर सद् वृत्तियों द्वारा सत्य की खोज कर मानव जाति को प्रेम-पथ पर अग्रेसर करने का संकल्प किया। यह क्षण निश्चय ही मानव जाती के विकास में सर्वाधिक मंगलकारी क्षण था। परंतु जैसे ही मानव ने अपनी अभिलाषाओं को वास्तव में उतार ने का प्रयास किया तब उसे विरोधी शक्तियोंका सामना करना पड़ा। तब उसने अनुभव किया कि विरोधी शक्तियों का सामना कोई नहीं कर सकता। इसलिए व्यक्तिगत भावों को उदार एवं व्यापक बनाने की दिशा में मानव ने प्रयास किया। वह प्रयास है, विश्व समुदाय को उस मकाम तक पहूचाना, जहाँ विघटनकारी तत्वों का अस्तित्व नहीं होगा। वहाँ केवल शांती और समता होगी, जो देश काल की सीमा में आबध्द नहीं है, समग्र मानवता के लिए चिरंतन सत्य है।

चिरंतन सत्य की खोज में अन्य सभी संस्कृतियों के साथ भारतीय संस्कृति ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्राचिन काल से ही भारतीय ऋषि - मुनियों ने जीवन मूल्यों की खोज की ओर उन्हें जीवन में प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया। अनेकता में एकता और परस्पर विरोंधी तत्वों में समन्वय की चेष्टा ही भारतीय संस्कृति की विशेषत है। इसका प्रभाव भारतीय साहित्य पर भी पड़ा विशेषः काव्य पर दिखाई देता है। प्रत्येक युग का क्षेष्ठ काव्य सार्वभैमिक मूल्यों को अभिव्यक्त करता है। आधूनिक हिन्दी कविता में प्रसाद, निराला, पंत और वर्तमान भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक मूल्यों को युगानुरूप नयी दिशा में विकसित करने के कारण ही विश्व साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

काव्य में सार्वभौमिकता

कविता में सार्वभौमिकता से तात्पर्य है कोई भी कविता किसी भी काल में किसी भी देश के लोगों को प्रभावित करती है, उनमें चेतना जगाती है। कविता की यह शक्ति स्थान और समय की परिधि से मुक्त करके सर्वव्यापक बनती है। अनंतकाल तक काव्य की संप्रेषणीयता बनाए रहती है। राजशेखर के शब्दों में, ''किसी कवि की कविता अपने घर तक सीमित रह जाती है, कोई कवि ऐसा होता है जिसकी रचना मित्र - मंडली तक पहुच जाती है,परंतु ऐसे कवि थोडे ही होते हैं जिनकी कविता सभी के मुखों पर पदन्यास करती हुई विश्व-कुतूहली की भाती दुनिया भर में फैलजाती है''[9] मानवीय भावों और विचारों को सार्वभौमिक स्तर पर आंदोलित करना ही सार्वभौमिकता की पहचान है। 'डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्मस' में सार्वभौमिकता को इस प्रकार स्पष्ट किया है, ''कलाकृति का वह गुण जो उसे किसी विशेष स्थिति, स्थान, समय, व्यक्ति और घटना की सीमाओं का अतिक्रमा करने में इसे समर्थ बनाता है, जिससे वह किसी भी काल में किसी भी स्थान के मानव के हित के लिए लाभदायक हो। कविता की

सार्वभौमिकता कवित्वशक्ति पर निर्भर होती है। कवि के ज्ञान की व्यापकता,जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता तथा संप्रेषनियता ही काव्य को सशक्त बनाती है। ''कवि को 'परिभूः स्वयंभू' कहा गया है। परिभू वह है जो अपनी अनुभूति के क्षेत्र में अथवा दृष्टिक्षेप में सब कुछ समेट ले और 'स्वयंभू' जो अपनी अनुभूति के लिए किसी का भी ऋणी न हो।'[२]

सामयिक और शाश्वतये दो काव्य के तत्व है। इन तत्व के कारण शिवत्व की अभिव्यंजना, सत्य का उद्घाटन, तथा अखंड आनंद का सृजन का प्रस्तुतीकरण है।

आधुनिक हिन्दी कविता में सार्वभौमिकता

आधूनिक हिन्दी कविता में देश-काल निरपेक्ष व्यापक चेतना सें सम्बन्ध है, जो मानवीय भावनाओं का विविधता में एकता का संधान कर व्यक्ति और विश्व की दूरी को मिटाती है। श्रेष्ठ कवि वही है जो अपने देश की संस्कृति के अर्थवान तत्वों का पुर्नमूल्याकन कर मानवता के विकास में योग देता है। बीते हुए युग का सत्य वर्तमान सत्य से जोड़कर एक तारतम्यऔर एकसूत्रता स्थापित करता है और सत्य की खोज की परम्परा में जुड़ जाता है। अतीत वर्तमान और भविष्य के प्रति जागरूकता ही उसमें उस क्षमता को विकासित करती है। जिसके कारण युग की सांस्कृतिक चेतना को एक नयी दिशा देता है। निर्मल वर्मा के शब्दों में, ''साहित्य में प्रश्न अनुभव के विषय का नहीं है, बल्कि उस रूप और रास्ते का है जिसके द्वारा वह अनुभव एक विशिष्ट सांस्कृतिक चेतना में परिलक्षित होता है। दूसरे शब्दों में अनुभव का कांटेन्ट चाहे जैसा हो, महत्व इस चीज का है किवह चेतना के किस धरातल और रूप में एक व्यक्ति से जुड़ता है।''[३]

हिन्दी की आधुनिक कविता में जिस सार्वभौमिकता के दर्शन होते है उसका घनिष्ठ सम्बन्ध भारतीय चिंतन और संस्कृति से है। भारतीय संस्कृति में विविध युगों में जिन सार्वभैमिक मूल्यों का विकास हुआ वे आधुनिक हिन्दी काव्य में विकास हुए है। इस युग के प्रमुख स्वच्छंदतावादी कवि प्रसाद, पंत, निराला और महादेव वर्मा ने अपने-अपने ढंग से शाश्वत जीवन-मूल्यों को काव्य में प्रतिष्ठित किया। छायावादी काव्य के विषय में सुमित्रानंदन पंत का कथन उल्लेखनीय है, ''उस काल की उपलब्धि को विश्व-बोध की संगति तथा विश्व-शक्तियों की पृष्ठभूमि में न देखना उस नवीन वीराट संचरण के प्रति अन्याय करना होगा। इस दृष्टि से प्रमुख छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के काव्य का स्वतंत्र मुल्याकन किया जा रहा है।

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का समग्र काव्य प्रेरणा का स्त्रोत है। उनके काव्य में मानव के अधःपतन से क्षुब्द, विचलित, पीड़ित किन्तु आशावादी कवि हृदय है। उनके काव्य के तीन महत्वपूर्ण विषय है - मानव, प्रकृति और विश्व। विश्वप्रकृति का असीम शक्ति का धारक 'मानव' किस प्रकार दुर्बलताओं से उठकर आनंददायी विश्व के निर्माण में योग दे सकता है, यही उनके चिंतन का विषय है। मानव विश्व का एक महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन वह अपने भ्रमों के कारण विश्व - व्यापी समरसता से कट गया है। इस भ्रमजाल से दूर कर व्यक्ति को विश्व से जोड़ना चाहते है। ''प्रसाद स्थूल से सूक्ष्म, बाहयता से आंतरीकता, असत् से सत्, मलिनता से पवित्रता, निराशा से आशा, अहंकार से आत्मविश्वास स्वार्थसे परमार्थ, कामना से साधना, वासना से प्रेम, वेदना से संवेदना, प्रतिशोध से प्रतिरोध, प्रतिहिंसा से क्षमा, व्यष्टि से समष्टि, विवशता से संकल्पनात्मकता, स्वच्छंदता से संयम, नकारात्मकता से सकारात्मकता, प्रश्नाकुलता से समाधान,संघर्ष से शांति, अतित से भविष्य, व्दव्द से समन्वय, अतिरेकता से समरसता, देव से मानव तथा सुख से आनंद की ओर बढ़े है।''[४]

प्रसाद विश्वसंस्कृति के जिस स्वरूप की कल्पना करते है, उसमें व्यक्ति, कुटुंब, समाज और राष्ट्रसभी का अस्तित्व है। उनकी विश्व संस्कृति की कल्पना सार्वभौमिक प्रेम, करूणा और समता के सिध्दांत पर आधारित है। भारतीय दर्शन के आधार पर उन्होंने सार्वभौमिक जीवन - दर्शन का निर्माण किया और आधुनिक युग के अनुरूप उसका लोकमंगलकारी रूप प्रस्तुत किया। प्रसाद की प्रथम कृति

'चित्राधार' कवि की दार्शनिक प्रवृत्ति का परिचय देती है। इसमें कवि प्राकृतिक सौंदर्य से संतुष्ट नहीं होते, बल्कि उस सौंदर्य-आवरण के पिछे छिपे रहस्य को जानने के लिए अधिक गहराई में जाने का प्रयत्न करते है। भक्ति की अपेक्षा क्षध्दा का अधिक विकास उनकी कविता में हुआ है। इसलिए जब वे अपने आस-पास के मानव जीवन में झाँकते है तब सर्वत्र व्याप्त वैषम्य को देख कर विचलित होते है, उनका ध्यान भक्ति से हटकर मानव जीवन पर केंद्रित होता है-

''प्यारे मनुष्य उरमध्य निवास तेरो।
सन्मार्ग क्यों नहीं बतावहु जाहि हेरो।।
वीणा सुतार नहिं सुंदर साजती है।
आनंद राग भरी क्यों नहीं बाजती है।''[६]

'प्रेमपथिक'तक आते-आते कवि चिंतन के गहराई में चले जाते है। 'करूणालय' में कवि ने करूणा के सिध्दांत का निर्माण किया है। तो 'महाराणा का महत्व' में प्रसाद की काव्य चेतना राष्ट्रसे जुड़ जाती है। 'काननकुसुम' में प्रसाद ने पहली बार विश्वसंबंधी धारण को स्पष्ट किया। 'आसू' में कवि के दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विकास का परिचायक है। 'चित्रधार' में राष्ट्रीयचेतना का उद्‌भव हुआतो उसका विकास 'लहर' में हुआ है। 'कामायनी' में वैज्ञानिक युग की भोगवादी संस्कृति और साम्राज्यवादी राजनीति की समस्या को अपना विषय बनाया। पारस्पारिक वैषम्य पर आधारित राजनीति का तिरस्कार कर बंधुत्व और समता के अधार पर प्रेम-राज्य की स्थापना करता है।प्रसाद राष्ट्रकी सीमा को तोड़कर विश्व मानवतावाद की ओर बढ़ते है। डॉ. कमलेश्वर प्रसाद सिंह के मतानुसार, ''प्रेमराज्य एक दिन 'प्रेम पथिक' का रूप धारण करता है और उसकी प्रेम भावना 'पेम पथिक' का प्रेम-दर्शन और 'कामायनी' का सामरस्यमूलक शैवदर्शन बन जाती है।''[७]

निराला

निराला प्रसाद की तरहमानव जाती के अभ्युत्थानके अभिलाषि कवि है। निराला त्रस्त,दुर्बल और असहाय मानव को निर्भिक, साहसी तथा आत्मविश्वासी बनाने के लिए विश्वास जगाने का प्रयत्न करते है। उनके काव्य में शक्ति तत्व का महत्वपूर्ण स्थान है,जो अंदर- बाहर सर्वत्र व्याप्त है। बाहय जगत में प्रकृति सक्रिय है और मानव अंतस्तर में सूक्ष्म चेतना के रूप में विद्यमान है। इन दोनों शक्ति में सामंजस्य निर्माण कर मानव जीवन का विकासकरने का प्रयत्न करते है इस लिए परिवर्तन की आवश्यकता है।मानव को बंधनों से मुक्त करने के लिए वे क्रांती का पथ चुनते है। उनकी मुक्ति विषयक विचारों के मूल में वेदांत की विशेष भूमिका है।अतः वेदांतिक साम्यदर्शन मानव को मानव से, राष्ट्र को राष्ट्र से जोड़ने वाला है। निराला के शब्दों में, ''इसके अनुभव की क्रिया ही साधना है, और अनुभव के पश्चात की स्थिति, संस्कृति की रक्षा दुसरों के लिए है। तब उस मनुष्यके विचारकिसी हद में, किसी स्वार्थ में नहीं बंधे रहतेः तब वह विश्व नागरिक और उसकी बाते यथार्थ विश्वजनीन होती है, उसकी क्रिया दिव्य गुण युक्त।''[८]

निराला के काव्य के तीन दौर मिलते है।प्रथम दौर के कविताओं में काव्य की भावभूमिका का निर्माण हुआ। उन पर रविन्द्रनाथ और विवेकानंद का प्रभाव था। उनमें दार्शनिकता होने के कारण वैशम्यभाव है। 'तुम और मै' कविता में कवि जीव और ब्रम्ह की अव्दैतावस्था की काव्यात्मक अभिव्यक्ति करता है। 'कण' कवितामें अव्दैत की अनुभूति के बाद संसार में भेदभाव, घृणा व्देष देखने के पश्चात उनके मन में संभ्रम दिखाई देता है-

''पाया हायन अब तक इसका भेद
सुलझी नहीं ग्रंथी मेरी, कुछ मिटा न खेद।''[९]

कवि समाज के हर वर्ग से जुड़ जाता है। मानव जीवन में उसे दुःख, वेदना, कष्ट, स्वार्थ उत्पीड़न का राज्य दिखता है। इसका चित्रण 'भक्षुक' और भारतीय समाज की 'विधवा' कविता में करते है।'गीतिका' में समष्टि के स्तर पर मानव से तादात्य की स्थिति है। निराला का मत था कि, ''सीमा के अंदर घिर कर बंद रहना जिस तरह मनुष्यों की प्रकृति है उसी तरह सीमा के संकिर्णबंधनों को पार कर जाना भी मनुष्यों की ही प्रकृति है, पहली एकदेशिक है, दूसरी व्यापक।''[१०]

सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत के कव्य में समग्रता, पूर्णता और आखंड़ता प्रप्ति के लिए सचेत भू-जीवन की चेतना की अभिव्यक्ति की है। सृष्टि के मुल में व्याप्त चेतना को जीवन में परिणत करने की इच्छा से ही उनकी रचना प्रक्रिया प्रेरित है। स्वयं कवि के शब्दों में, ''धरती की चेतना आज नविन प्रकश है। धरती की चेतना आज नविन सौंदर्य चाहती है। वह सौदर्य मानव चेतना के सर्वांगिण जागरण का सौदर्य चाहती है। वह पवित्रता मनुष्य के अंतर्मुख तप तथा बहिर्मुख-साधना की पवित्रता है। धरती की चेतना आज पवित्र वाणी चाहती है और वह वाणी मानव उर में विकसित हो रही विश्व प्रेम की वाणी है।''[११] प्रकृति अब मानव के विकास-पथ में अवरोधक नहीं है। अतः मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त कर विश्व-जीवन की परिस्थितियों का नये रूप से विकास करने में सक्षम है। आज का युग राष्ट्रीय मुल्यों का नहीं, विश्व मूल्यों का है, जिसका लक्ष्य विश्व-शांति है।

सुमित्रानंदन पंत व्यक्ति-मुक्ति, सामूहिक समता और मानवीय एकता इनतीनों को मानव-मूल्यों के रूप में विश्लेंषित करते है जो मानव के विकास के लिए अनिवार्य है। मानवीय मुल्यों को वे भीतर-बाहर दोनों और फैले हुए चाहते है। व्यक्तिऔर समाज में सामंजस्य स्थापित करके ही यह स्थिति संभव है। पंत की कविताओं में भाव, विचार कल्पनाएँ,स्वप्न, आकांक्षाएँ सार्वभौमिक और सार्वकालिक सत्य है।कवि के मन में एक और मन का आवेश है। तो दुसरी ओर जननी की करूणा का उन्मेष। इसलिए कवि चाहता है कि उसे करूणा क्रन्दन करने दिया जाए, जिससे मन निर्मल हो जाए। वह जननी से अनुरोध करता है-

द्रोह, मोह, छल, मदन,मद मुझे
निज संगति से खोने दो
हाथ पकड़, यह विश्व महोदधि
तरने दो, माँ!तरने दो।''[१२]

पंत की 'परिवर्तन' कविता मानसिक परिवर्तन का द्योतक है। 'गुंजन' कविता में कवि आशावादी है। 'युगांत'में उनके विचारों में क्रातीकारी परिवर्तन हुए। 'युगवाणी' में मार्क्सवाद और गांधीवाद के आध्यात्मवाद का समन्वय हुआ। 'ग्राम्या' में वस्तु- सत्य को महत्व दिया। मानव में निहित एक सांस्कृतिक आंदोलन द्वारा समग्र मानव को संगठित कर एक विश्व संस्कृति कानिर्माण कर कल्याणकारी तत्वों के माध्यम से जन-जीवन की पूर्णता की प्राप्ति के लिए विश्व के सभी मानव परस्पर संबंध होंगे। उनका कहना है, ''मानव मुल्यों का स्त्रोत देश काल से उपर है। भूत, भविष्य, वर्तमान में अभिव्यक्ति पाने वाले मूल्य सब उसी सत्य के विकासशील अंश है। तीनों काल एक-दूसरे पर अवलंबित होने के साथही मुख्यतःउस सत्य पर अवलम्बित है।... उसे दिव्य न कहकर मानवीय ही कहे तो वह वर्तमान मानव-विकास की स्थिति से कही महान है। जिसमें अनेक भविष्यों का मानव अंतर्हित है।''[१३]

महादेवी वर्मा

काव्य आध्यात्म की उच्च भूमि पर मानव आत्मा का असीम के प्रति आकुल अभिव्याक्ति महादेवी वर्मा के काव्यमें है। उनके काव्य में दो पक्ष्य है आध्यात्म और लौकिक जो असीम और ससीम का प्रतिनिधित्व करते है। अपनी निराली जीवन-पध्दति के कारण महादेवी की स्थिति अन्य छायावादी कवियों से कई संदर्भो में भिन्न रही। उनके कव्य का आरंभ ही आध्यात्मिक उपलाब्धियों से होता है।

एक नारी होने के कारण, वात्सल्य, स्नेह, संवेदनशीलता, त्याग आदि भावों ने उनके काव्य को कोमल भावों से प्रस्तूत किया।

महादेवी का जीवन साधारण से भिन्न रहा है। उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण झॉकियॉ उनकी रचनाओं विशेष रूप से 'संस्मरणों' में दिखाई देती है। रचनाओं के आधार पर उनके काव्य की भाव-भूमी को भली - भाती समझा जा सकता है। काव्य -रचना महादेवी का मुख्य कर्म नहीं था। सुख - दुख में समझदारी, दुख कष्ट को दूर करने का प्रयास यही उनके जीवन के नित्य कर्म के अंग थे। दिन भर के थकान के बाद जब नीरव एकांत के कुछ विश्राम घडियों में हृदय के कोमल भावों के माध्यम से, कविताओं की सृष्टि होती थी। काव्य सृजन उनके लिए सर्वस्व नहीं था मानवता के प्रती निष्काम कर्म-साधना उनके लिए सर्वस्व था। प्रेम और विरह की अनुभूति, दुःख की अनुभूति, करुणा का उद्रेक और मानव कल्याण की अभिलाषा उनके काव्य के यह चार आधार स्तंभ है।

महादेवी के प्रेम का आलंबन अलैकिक प्रियतम है, उनके काव्य का तत्व रागतत्व है। शाश्वत प्रेम की अभिव्यक्ति ही उनके काव्य में हुई है। वह समग्र विश्वके साथ घनिष्ठ सबंध स्थापित कर उसकी वेदना पिड़ा को अपने अंतर में समेट लेती है। सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में, ''जो, घनीभूत पीड़ा या वेदना प्रसाद के मस्तक में स्मृर्ती-सी छाया थी, वह महादेवी के भावनाजगत में अधिक गहरी, तीव्र तथा मर्मस्पर्शी होकर व्याप्त मिलती है। उनके काव्य का सर्वप्रमुख तत्व वेदना का आनंद, वेदना का सौंदर्य और वेदना के लिए आत्मसमर्पन है।वह तो वेदनाके साम्राज्य की एकछत्र साम्राज्ञी है।''[१४]

महादेवी ने अपने काव्य विकास केतीन आयामों का उल्लेख किया है। पहला आयाम बाल्यकाल की तुकबंदियों का है। दूसरा किशोरावस्था की समस्यापूर्तियों का तो, तिसरा ससीम से असीम की ओर काव्य विकास है। 'निहार' से ही उनके काव्य चेतना का विकास हुआ। रश्मि मे कवयित्री सृष्टि की रहस्यमयी संरचना पर सोचती है-

''सच हैकण का पार ना पाया,
बन बिगड़े असंख्य संसार
पर न समझना देव हमारी
लघुता है जीवन की हार !
आओ हे निस्सीम ! आज
इस रजकण की महिमा देखे।''[१५]

सुख के बाद दुःख की स्थिति है तो दुःख के बाद सुख की। 'साध्यगीत' में असीम से एकाकार होने की तो 'दिपशिखा' मे तादात्म्य के कारण सृष्टि के कण-कण से घुल-मिल जाती है। समग्र सृष्टि के साथ तादात्म्य कवयित्री के व्यक्तित्व को वैश्विक आयाम देता हैं। कवयित्री की आत्मा देश-काल के बंधनों से मुक्त होकर सार्वभैमिक बन जाती है।

निष्कर्ष-

१) काव्य के सार्वभौमिक होने का भाव ही सार्वभौमिकता है।

२)आधुनिक हिन्दी कविता में सार्वभौमिकता से तात्पर्यदेश-काल निरपेक्ष व्यापक चेतना से है, जो मानव और समष्टिकी भावनाओं का परिष्कार है।

३)अतिबौध्दिकता, अतिवैज्ञानिकता, अतियांत्रिकता और अति भोगवादिता के कुपरिणामों से विश्व का प्रत्येक व्यक्ति जुंझ रह है, जो मनु और कामयानी है, वही अधूनिक पुरुष और नारी भी है।

४)प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत तथा महादेवी की काव्य चेतना सार्वभौमिक चेतना की वाहक बन जाती है विश्व-ऐक्य, विश्व-शांती, विश्व प्रेम का न केवल संदेश सुनाती है, अपितु ईसकी दिशा भी स्पष्ट करती है।

५)साहित्य देश की वाणी को, देश के ही दिव्य स्वर को सुनना चाहता है। इसलिए उनकी दृष्टि में साहित्य का लक्ष्य आस्ति, भाति और प्रिय है और उनका साधन सत्य और आनंद है।
६)उनकी साहित्य चेतना सभी बंधनों और सीमाओं को तोड़कर विश्वरुप से जुड़कर पूर्णता पाती है।
७) उनके काव्य में अंर्तुभूत सत्य के आधार पर जीवन की सूक्ष्म परिणति मिलती है।
८)जिस सत्य का संबल लेकर महादेवी वर्मा तथा सभी कवि काव्य जगत में प्रवेश करते है, उनमें उन्हें निरंतर गहराई आती गई, उनके साथ सार्वभौमिकता का संदर्भ अधिक गहरे रुप में जुड़ता गया।

संदर्भ-

१)आ रामचंद्र शुक्ल, चिंतामणि, भाग-II, इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग, प्र.स. १९५३, पृ. ४३
२)सं. धिरेद्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश (भाग-II) ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, १९८५
३)निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृर्ति, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नयी दिल्ली, दि.स. १९७९, पृ. ५३
४)पंत,छायावादपूर्मूल्यांकन, सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड-६, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स १९६५, पृ. ५३
५सत्यपाल, प्रसादः भारतीयता के प्रतिमान, विद्या विहार, नयी दिल्ली, प्र.स. १९९०, पृ. १५१
६) डॉ. प्रेमशंकर, प्रसाद का काव्य, भारती भंडार, लीडर भवन, इलाहाबाद, प्र.स. १९८६, पृ. ४३
७)डॉ. कमलेश्वर प्रसाद सिंह, प्रसाद की काव्य प्रवृत्ति, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, प्रसं १९६६, पृ. ५३
८) निराला रचनावली खंड-६, राजकमल नंदकिशोर नवल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.स १९९२, पृ ५३
९)वही,पृ. ३७
१०)वही,पृ. १५६
११)सुमित्रानंदन पंत, सुमित्रानंदन पंत, ग्रथावली, खंड-६, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.स. १९७९, पृ. ४२८
१२)वही , पृ. ८८
१३)वही, पृ. १८१
१४)पंत, छायावाद : पूर्नमूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स. १९६५, पृ. ८४
१५)सं. गंगाप्रसाद पाण्डेय, महादेवी के क्षेष्ठ गीत, राजपाल एंड संज दिल्ली, प्र.स. १९६८, पृ २४